ई-संस्करण, अंक 34

Room to Read®
World Change Starts with Educated Children.®

# गपशप

प्यारे साथियों,
आशा है कि आप और आपका परिवार अच्छे से होंगे। जैसा कि आप जानते हैं कि सभी बच्चों के स्कूल अभी भी बंद हैं और सब अपने–अपने घर पर ही हैं। हमने सोचा कि हमारे साथियों को अपने गपशप का इन्तज़ार होगा, तो हम आपके लिए लेकर आए हैं गपशप का नया अंक। जिसमें हम सब जानेंगे कोरोना के समय में अपने समय का सदुपयोग कैसे करें और इंटरनेट पर ऑनलाइन पढ़ाई करते वक्त किन बातों का ध्यान रखें। आशा है कि आपको इसे पढ़कर अच्छा लगेगा। घर पर रहें, सुरक्षित रहें।

## लड़कियों की शिक्षा की लड़ाई लड़ने वाली मलाला

मलाला का जन्म 1997 में पाकिस्तान के ख़ैबर पख़्तूनख़्वाह प्रांत के स्वात ज़िले में हुआ। तालिबान ने 2007 से 2009 तक स्वात घाटी पर कब्ज़ा कर रखा था। उन्होंने लड़कियों के स्कूल जाने पर पाबंदी लगी दी थी। साल के अंत तक करीब 400 स्कूल बंद हो गए। मलाला तब आठवीं की छात्रा थी और यहीं से उसका संघर्ष शुरू हुआ। इसके बाद मलाला के पिता उसे पेशावर ले गए जहाँ उन्होंने नेशनल प्रेस के सामने भाषण दिया जिसका शीर्षक था– 'तालिबान की क्या मजाल कि मुझसे मेरी बुनयादी शिक्षा का हक छीन ले।' तब वो केवल 11 साल की थी।

चित्र स्त्रोतः फेमिनिज्मइनइंडिया.कॉम

2012 को तालिबानी आतंकी उस बस पर सवार हो गए जिसमें मलाला अपने साथियों के साथ स्कूल जाती थीं। उनमें से एक ने बस में पूछा, 'मलाला कौन है?' सभी ख़ामोश रहे लेकिन उनकी निगाह मलाला की ओर घूम गईं। इससे आतंकियों को पता चल गया कि मलाला कौन है। उन्होंने मलाला पर गोली चलाई जो उसके सिर में जा लगी। गंभीर रूप से घायल मलाला को इलाज के लिए ब्रिटेन ले जाया गया। देश–विदेश में मलाला के स्वस्थ होने की प्रार्थना की गई और आख़िरकार मलाला स्वस्थ होकर लौटीं।

लड़कियों की शिक्षा के अधिकार की लड़ाई लड़ने वाली साहसी मलाला यूसुफज़ई की बहादुरी के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा मलाला के 16वें जन्मदिन पर 12 जुलाई को 'मलाला दिवस' घोषित किया गया। 17 वर्षीय मलाला को 2014 में नोबेल शांति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

## अंग्रेज़ों से लोहा लेने वाली बेगम

चित्र स्त्रोतः आईदिवा.कॉम

इतिहास गवाह है कि ब्रिटिश राज के ख़िलाफ देश की महिला क्रांतिकारियों ने भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाया। तो आइये जानते हैं कि कैसे उन्होंने अपनी वीरता और कुशल नेतृत्व से अंग्रेज़ों को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया –

1857 का स्वतंत्रता संग्राम छिड़ चुका था। नवाब वाजिद अली शाह को अंग्रेज़ों ने उन्हें बंदी बना लिया और उन्हें लगा की अवध उनकी मुट्ठी में है। मगर जल्द ही उनका यह भ्रम टूट गया जब वाजिद अली शाह की बेगम ने खुद ही क्रांति की कमान थाम ली। पूरे अवध में बेगम के नेतृत्व में अंग्रेज़ों को जबरदस्त संघर्ष का सामना करना पड़ा। बेगम हज़रत महल के गज़ब के कुशल नेतृत्व के कारण अवध के जमींदार, किसान और सैनिक सभी उनके साथ हो गए। हिंदू हो या मुस्लिम, उन्होंने सभी राजाओं को साथ लेकर अवध में हर तरफ अंग्रेजों को हरा दिया। पूरी दुनिया में पहली बार अंग्रेजों की शान 'यूनियन जैक' को लखनऊ रेजीडेंसी में ज़मीन पर गिरा दिया गया। हालांकि, जल्द ही अंग्रेज़ों ने अपने बेहतर हथियारों की बदौलत लखनऊ पर कब्ज़ा कर लिया, जिसके कारण बेगम को लखनऊ छोड़ना पड़ा। उनके सीने में क्रांति की आग ठंडी नहीं हुई। अवध के जंगलों को उन्होंने अपना ठिकाना बनाया और गुरिल्ला युद्ध नीति से अंग्रेज़ों की नाक में दम कर दिया। इनकी सेना में महिला सैनिक दल भी शामिल था। आलमबाग की लड़ाई में बेगम हाथी पर सवार होकर दुश्मन से लड़ने के लिए गई थीं।

## महान वीरांगना ऊदा देवी पासी

आज़ादी की लड़ाई में समाज के सभी वर्गों और जातियों के लोगों ने हिस्सा लिया था। 1857 के स्वतंत्रता आन्दोलन की नायिका ऊदा देवी पासी एक महान वीरांगना थी। उनकी बहादुरी से प्रभावित होकर बेगम हज़रत महल ने उन्हें महिला सेना की टुकड़ी का कमांडर बना दिया।

चित्र स्त्रोतः इंटरनेट से फ्री इस्तेमाल हेतु

10 मई 1857 को लखनऊ में अंग्रेज़ी फौज और विद्रोही सेना के बीच लड़ाई हुई। इस लड़ाई में अंग्रज़ी फौज को मैदान छोड़कर भागना पड़ा। अंग्रेज़ी सेना इस पराजय का बदला लेने की तैयारी कर रही थी। उन्हें पता चला कि लगभग दो हजार विद्रोही सैनिकों ने लखनऊ के सिकंदर बाग में शरण ले रखी है। अंग्रेज सैनिकों ने सिकंदर बाग की उस समय घेराबंदी की, जब सब सैनिक सो रहे थे। अंग्रेज़ सैनिक तेज़ी से आगे बढ़ते गए। मैदान के एक हिस्से में महिला टुकड़ी के साथ ऊदा देवी भी मौजूद थी।

दुश्मन को निकट देखकर, हाथों में बंदूक और कंधों पर भरपूर गोला–बारूद लेकर वह पीपल के एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गयी। पेड़ की डालियों और पत्तों के पीछे छिपकर उसने हमलावरों पर फायरिंग शुरू कर दी। उस हिस्से में तब तक प्रवेश नहीं करने दिया, जब तक उनका गोला–बारूद खत्म नहीं हो गया।

ऊदा देवी ने अकेले ब्रिटिश सेना के दो बड़े अफसरों सहित 32 अंग्रेज़ सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया था। गोलियां खत्म होने के बाद ब्रिटिश सैनिकों ने पेड़ को घेरकर उनपर अंधाधुंध फायरिंग की। जब वह पेड़ से नीचे उतरने लगी तो उन्हें गोलियों से छलनी कर दिया गया। अंग्रेज़ अफसर यह देखकर हैरान रह गया कि वीरगति प्राप्त वह बहादुर सैनिक कोई पुरुष नहीं, एक महिला थी।